in Orissa is quite devastating. So there should be a full discussion and accordingly I take the sense of the House — so far as Orissa situation is concerned, about 180 starvation deaths were reported and there is large — scale migration from Kalahandi, Bolangir and Koraput to other States. I want to take the sense of the House — that there should be a Short Duration Discussion on this matter and since I have been allowed a Specail Mention, here I would like to submit that there is serious drought situation prevailing in Orissa. It is alarming to note that the undivided districts of Kalahandi, Bolangir and Koraput have been identified by the Central Government as starvation-death pockets. The projects regarding Kalahandi, Bolangir and Koraput for Rs. 4557.3 crores are not seriously implemented by the State Government.

Our hon. Prime Minister, during his last visit to Kalhandi, has announced Rs. 50 crores towards drought relief measures. I request the Central Government to give us more funds to enable us to take up drought relief measures seriously. Further, I want this House to take a serious note of the drought situation in our State. The House should have a full-fledged discussion on this issue.

Thank you, Madam.

Recent Kidnapping/Assault on Indian Diplomats in Pakistan

श्री संजय निरूपम (महाराष्ट्र): उपसभापति महोदया, मैं पिछले एक हफ्ते से यह विषय यहां रखना चाह रहा था लेकिन मुझे मौका नहीं मिला। मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे आज यह मौका दिया है। महोदया, पिछले महीने के आखिरी हफ्ते में पाकिस्तान में हमारे जो डिप्लोमेट थे, उन पर हमला किया गया, उन्हें किडनैप किया गया। श्री अशोक वाही और उनकी पत्नी को ह्यूमिलिएट किया गया। जिन्होंने यह सब किया वे पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई॰एस॰आई॰ के एजेंट थे।

महोदया, मेरा पहला सवाल यह है कि इस घटना के विरोध में भारत सरकार को, हमारे विदेश मंत्रालय को जो प्रोटेस्ट नोट भेजना था, उसमें इतना समय क्यों लगा? कम से कम 4-5 दिन लगे उन्हें प्रोटेस्ट नोट भेजने में और क्या सिर्फ प्रोटेस्ट नोट भेज देना काफी है? क्योंकि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। इससे पहले 1995 में हमारे डिप्लोमेट एजेश मित्तल के साथ यही हादसा हुआ और इससे पहले 1994 में दिनाक चक्रवर्ती के साथ यही दुर्व्यवहार हुआ। तो पाकिस्तान का यह सालाना कार्यक्रम है। इस सालाना कार्यक्रम के लिए हमारी सरकार के पास जवाबी कार्यक्रम क्या है? क्या सिर्फ प्रोटेस्ट नोट भेजने से हो जाएगा?

महोदया, मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि यह अनजाने में नहीं होता है। यह पाकिस्तान सरकार की रणनीति है। यहां की आई॰एस॰आई॰ एजेंसी की घोषित रणनीति है। इस रणनीति को बताने के लिए मैं एक किताब लेकर आया हूं। इस किताब का नाम है — "पनतिहा"।

उपसभापति: "पनतिहा" नहीं होगा, "फतह" होगा, जिसका अर्थ है — विक्टरी।

श्री संजय निरूपम: हो सकता है। उर्दू मैं समझ नहीं सकता, मुझे जो जानकारी मिली उसके हिसाब से "विजेता" इसका अर्थ बताया गया है।

इस किताब को लिखा है आई॰एस॰आई॰ के फॉर्मर चीफ जनरल अख्तर रहमान के पुत्र पनरूल रशीद ने। उन्होंने इस किताब के 161वें पृष्ठ पर लिखा है कि जनरल को भारतीयों से चिढ़ थी। एक दिन उसने अपने अफसर को तलब किया और दिल्ली से टेलेक्स द्वारा आया समाचार उसके हवाले कर दिया और इशारे से कहा कि भारतीयों का कर्ज चुका दिया जाए। यह अफसर उस वक्त कमरे से बाहर निकल रहा था तब उन्होंने ऊंची आवाज में कहा कि — Dont' kill him. उसी शाम आई॰एस॰आई॰ के प्रशिक्षित कर्मचारियों ने भारतीय उच्चायोग के एक कर्मचारी को पकड़ा। जिस अफसर को यह जिम्मेदारी सौंपी गई थी, उसने भारतीय अधिकारी को दो-चार थप्पड़ लगाने के बजाय, उसकी जमकर पिटाई की, उसके कपड़े उतरवा लिए और रात के अंधेरे में उसे इस्लामाबाद की एक सड़क पर छोड़ दिया।

मैडम, मेरे कहने का मतलब यह है कि ऐसा जान-बूझकर किया जा रहा है। पाकिस्तानी सरकार और पाकिस्तानी एजेंसीज जान-बूझकर ऐसी हरकतें करती हैं लेकिन इसको हमारे लोगों ने, हमारी सरकार ने, हमारे विदेश मंत्रालय ने कभी गंभीरता से नहीं लिया। मैं सवाल पूछना चाहता हूं अपने विदेश मंत्री से कि आखिर पाकिस्तान को लेकर इतना सॉफ्टनेस क्यों रखा जाता

है? कल यही बहस हो रही थी पाकिस्तान के प्रश्न पर तो विदेश मंत्री महोदय ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है। दुर्भाग्यपूर्ण इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि पाकिस्तान से हम अपने संबंध सुधारना चाहते हैं लेकिन पाकिस्तान हमसे संबंध नहीं सुधारना चाहता। तो मैं समझता हूं कि यह हमारा दुर्भाग्य नहीं है, यह पाकिस्तान का दुर्भाग्य होना चाहिए। हम पाकिस्तान के प्रति इतना ज्यादा प्रेम भाव क्यों दिखाते हैं? पाकिस्तान हमसे नफरत करता है और हम उसके जवाब में प्रेम देते हैं। क्या नफरत का जवाब हम बार-बार प्रेम से ही देंगे? क्या हम अपने अंदर नफरत पैदा नहीं कर सकते उनके लिए?

मैडम, मैं एक और जानकारी देना चाहता हूं आपको। पाकिस्तानी टी०वी० पर पिछले दिनों एक क्विज प्रोग्राम चल रहा था। यह सबूत के तौर पर आपके सामने मैं रखना चाहता हूं जिससे पता लगे कि पाकिस्तानी जनता हिंदुस्तान को किस तरह से देखती है, हिंदुस्तान के प्रति उनके मन में क्या भाव है। तो पिछले दिनों पाकिस्तानी टी०वी० पर एक क्विज प्रोग्राम चल रहा था। संयोगवश मुंबई में मैंने भी केबल के जरिए उसे देखा। उसमें 12—14 साल के बच्चे थे, उनसे संचालक ने पूछा * तो मालूम है उस बच्चे ने क्या कहा? उस बच्चे ने कहा*

SHRI PRANAB MUKHERJEE (West Bengal): This is in a very bad taste, Madam. How is it of urgent importance?

श्री संजय निरूपम: मेरा यह कहने का मतलब सिर्फ इतना है कि पाकिस्तानी लोग...(व्यवधान)

उपसभापति: अगर कोई दूसरे अपनी जुबान खराब करते हैं और देश के प्रधान मंत्री के बारे में इस तरह की बात करते हैं तो हम अपनी जुबान क्यों खराब करें। अपने सदन की गरिमा को उनकी बदतमीजी से क्यों खराब करें।

श्री संजय निरूपम: मैडम्: मैं यह नहीं कह रहा हूं कि अगर उन्होंने हमारे प्रधान मंत्री को * कहा तो हम उनकी प्रधान मंत्री जो निवर्तमान हो गई है, उनको * कहें।...(व्यवधान) मैडम्, मेरे कहने का मतलब यह है कि...(व्यवधान)

SHRI PRANAB MUKHERJEE: This is not an imoortant thine...

श्री संजय निरूपम: क्या कह रहे हैं आप मुखर्जी साहब।

SHRI PRANAB MUKHERJEE: This is not an important thing for which the House should be...

SHRI SANJAY NIRUPAM: This is very important, Sir, because...

SHRI PRANAB MUKHERJEE: After all, we are also Members of this House. Why should we listen to it? One can understand the illtreat-ment meted out to our officials and Members can express their views. But if somebody makes a derogatory remark about an Indian leader, I do't know what great advantage we will have by repeating it on the floor of the House.

श्री संजय निरूपम: सर, मेरा डेरोगेटरी रिमार्क्स नहीं है, मैं सिर्फ इसको यहां पर रैफर कर रहा हूं। मैडम्, मैं यह बताना चाहता हूं कि...(व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: It will not go on record. What I am trying to say is that you are a young, new, enthusiastic Member.

आप इस हाऊस के हमारे नए सदस्य हैं। आपके अंदर उत्साह है बोलने का। आपने जो विषय उठाया वह बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है कि हमारे जो डिप्लोमेट्स हैं उनका कोई जिनेवा कंवेंशन के तौर पर उनका कोई प्रोटक्शन है या उनकी कोई इज्जत है, जो उनको वह मिलनी चाहिए और पाकिस्तान में यह नहीं मिलती है, उनके साथ दुर्व्यवहार होता है, बुरा सलूक होता है, बदतमीजी की जाती है। अगर कोई देश हमारे जो भी लीडर हों, या हमारे प्रधान मंत्री हों, आप भी हो या हमारे इस हाऊस के सदस्य हों, गणमान्य सदस्य हैं, अगर कोई दूसरे मुल्क के लोग बदतमीजी पर उतरें और अपनी इज्जत गंवाकर आपको कुछ बुरा कहें तो उस चीज को हम अपनी जुबान से हमारे सदन के रिकार्ड पर क्यों लाएं और उनकी बात को दोहराकर उनको अहमियत क्यों दें...(व्यवधान) वह तो गलत काम कर रहे हैं। दो गल्तियां सही नहीं हो सकती।

श्री संजय निरूपम: मैडम्, मैं सिर्फ रिफ्रेंस दे रहा हूं। मैं अपनी...(व्यवधान)

श्री सतीश प्रधान (महाराष्ट्र): वहां जिस ढंग से लोगों को प्रशिक्षा दी जाती है और वहां लोगों को हमारे खिलाफ भड़काया जाता है और यह भड़कान्य भी

दूरदर्शन पर बताया जाता है, यह आपत्तिजनक बात है, यही सम्माननीय सदस्य कह रहे हैं।

श्री संजय निरूपम: मैडम्, मैं मुखर्जी साहब का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।...(व्यवधान)

उपसभापति: उसमें कोई दो राय नहीं है कि वहां यह सब होता है।

श्री एन०के०पी० साल्वे (महाराष्ट्र): माननीय सदस्य बहुत अच्छा बोल रहे हैं। वह नए मेंबर हैं, उनके साथ भविष्य है। उनको एक बात समझनी चाहिए। उन्होंने बहुत अच्छा मुद्दा उठाया, महत्वपूर्ण अहम मुद्दा है।

I wish him all the best in the years to come in the Parliament.

छोटा बात करने से वह डाइल्यूट हो जाता है। हमारे बच्चे भी पाकिस्तान के खिलाफ नारे लगाते हैं, वह भी हमारे खिलाफ नारे लगाते हैं। सदन की गरीमा का सवाल है। एक जो महत्वपूर्ण मुद्दे को उठाते हुए ऐसी बात न करें।

श्री संजय निरूपम : क्या वहां की पाकिस्तान सरकार ने उस कार्यक्रम पर कोई बैन लगाया।

श्री एन०के०पी० साल्वे: हम पाकिस्तान के खिलाफ नारे लगाते हैं। क्रिकेट मैच में मैंने पाकिस्तान के खिलाफ नारे सुने। सही बात नहीं है यह।...(व्यवधान)

उपसभापति: दूरदर्शन पर नहीं दिखाया गया...(व्यवधान)

श्री सतीश प्रधान: माननीय सदस्य यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि यह प्रोग्राम वहां कोई चिल्लाए तब उसके लिए नहीं, वहां पर दूरदर्शन के माध्यम से इल्जाम लगाया जाता है और हमारा दूरदर्शन ऐसा प्रोग्राम नहीं दिखलाता। वह हमारी गरिमा रखता है। हम अपने सदन की गरिमा रखना चाहते हैं। लेकिन अगर पाकिस्तान का दूरदर्शन ऐसा करता है तो कड़ी निंदा करने की आवश्यकता है, यह मुद्दा सदन का हो सकता है।

श्री एन०के०पी० साल्वे: देखिए, निंदा करने के और भी मौके हैं। मगर एक इंपोर्टेंट पोइंट को उठाते हुए यह

This is what I want to tell the hon. Member.

श्री सतीश प्रधान: यदि हमारे नेता का कोई अपमान करे और अपमान होने के बाद भी हम मुद्दा नहीं उठा सकते तो यह दुर्भाग्य की बात है।

उपसभापति: अच्छा, एक बात हम कहें। आप अच्छी बात उठा रहे हैं। आप नए मेंबर हैं। मैं उम्मीद करूंगी कि आप और अच्छी बातें उठाएं, इस देश के लिए उठाएं और देश-विदेश दोनों के बारे में उठाएं। मगर...(व्यवधान)

श्री एन०के०पी० साल्वे: इसे पार्टी लाईन पर न लें...(व्यवधान)

उपसभापति: सतीश प्रधान जी, आप तो बैठ जाइए। आपके मेंबर हैं यह मुझे मालूम है। मगर वह काफी समझदार हैं, वह खुद अपनी प्रोटेक्शन कर सकते हैं। मैं यह कह रही हूं कि इस हाउस में अगर किसी भी चीज पर कंट्रोवर्सी होती है तो जो बात आप कहना चाहते हैं वह तो कहीं खो जाती है, उसके बारे में अखबार में कुछ भी नहीं आता है और जो आस-पास की कंट्रोवर्सी होती है वह हैड लाइन बन जाती है। आप यह कहना चाहते हैं कि पाकिस्तान हमारे डिप्लोमेट्स के साथ दुर्व्यवहार करता है और हमारी सरकार को उस पर बहुत सख्ती से प्रोटेस्ट करना चाहिए और यह इस सदन को भी करना चाहिए। यही आपका मुद्दा है।

श्री संजय निरूपम: मैडम, मैं इस बात को थोड़ा सा एक्सटेंशन देता हूं कि भारत और पाकिस्तान के बीच में जो भी संबंध है उस संबंध को पूरी तरह से रिव्यू किया जाना चाहिए क्योंकि हम पाकिस्तान पर कहीं डिपेंड नहीं करते हैं बल्कि पाकिस्तान हमेशा हम पर डिपेंड करता है। पाकिस्तान को हमसे शक्कर भी चाहिए, पाकिस्तान को हमसे चावल भी चाहिए, पाकिस्तान को हमसे मशीनरी भी चाहिए। वे सब पाकिस्तान हमारे यहां से इम्पोर्ट करता है जबकि हम पाकिस्तान से सिर्फ आंतकवादी इम्पोर्ट करते हैं। मेरा कहने का मतलब यह है कि जिस तरह से आईएसआई ने हिन्दुस्तान में अपना नेटवर्क फैला रखा है तो उससे संबंध क्यों नहीं तोड़ लिये जायें?

मैडम, मैं यही बात कहना चाह रहा हूं कि पाकिस्तान के ऊपर हम इतना क्यों डिपेंड करते हैं, क्यों निर्भर करते है, क्यों नहीं पाकिस्तान को पूरी तरह से आइसोलेट कर दिया जाये? उससे संबंध क्यों नहीं तोड़ दिये जायें?

उपसभापति: अभी तीन तारीख को फॉरेन अफेयर्स के बारे में हाउस में डिसकसन होना है।...(व्यवधान)...

श्री संजय निरूपम: अगर हम पाकिस्तान पर डिपेंड नहीं कर रहे हैं और पाकिस्तान हम पर डिपेंड कर रहा है तो फिर उससे क्यों न नाता तोड़ दिया जावे? यदि एक बार आप उससे नाता तोड़ देते हैं तो वह फिर हमारी शर्तों पर हमसे संबंध स्थापित कर सकता है।

उपसभापतिः आपकी राय है आपने सदन म बाल दिया है...(व्यवधान)...

SHRI SATISH PRADHAN (Maharashtra) : Madam, I associate myself with it.

उपसभापतिः मुझे आपसे सिर्फ इतना कहना है कि मुझे इस हाउस में इतने साल हो गये हैं...(व्यवधान)...

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मीः अगर माननीय सदस्य का सुझाव मानकर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की समस्या एक मिनट में सुलझ जाये तो यह बहुत अच्छी बात है।...(व्यवधान)...

†[مولانا عبیداللہ خاں اعظمی: اگر مانیہ سدسیہ کا سجھاؤ مان کر ہندوستان اور پاکستان کی سمسیا ایک منٹ میں سلجھ جائے تو یہ بہت اچھی بات ہے۔۔"مداخلت"۔]

उपसभापतिः इस हाउस में मेरा जो अनुभव रहा है उस के बारे में मै खाली यह बताती हूं कि कोई अच्छी बात भी एक जुमले की वजह से या एक शब्द की वजह से विवाद में पड़ जाती है तो जो विवाद की बात होती है वही अखबार में आती है और वही सबको याद रहती है। आपने जो असली बात उठाई है, मुद्दा उठाया है वह बहुत अहम है, महत्वपूर्ण है, इम्पोरटेंट है वह कहीं खो जाता है। मेरा आपको खाली यह मशवरा है। आप मानें या न मानें यह आपकी मर्जी है। आप अगर एक अच्छे पार्लियामेंटेरियन बनना चाहते है तो आपका जो मेन सबजेक्ट है आप उसके ऊपर ही कंसन्ट्रेट करेंगे तभी आपकी बात सही मायने में रिपोर्ट होगी और वही बेटर रहेगी। फोरेन अफेयर्स के ऊपर तीन तारीख को डिसकसन होगा। आपके जो विचार हैं उनको आप उस दिन रखिएगा। आपको आजादी है अपनी बात रखने की मगर इस सदन की गरिमा का जरूर ख्याल रखिएगा। अगर बाहर कोई गाली देता है तो हम नहीं देते हैं, हम उसको रिपीट भी नहीं करते हैं क्योंकि अगर हम भी वैसा ही करेंगे तो हममें और उनमें कोई फर्क ही नहीं रहा जाता है।

श्री संजय निरुपमः मैडम, में सदन की गरिमा का पूरा ख्याल रखते हुए सिर्फ यही अनुरोध करना चाहता हूं कि मैंने एक रेफरेंस दिया है कि इस तरह की हरकतें हो रही है।...(व्यवधान)...

उपसभापतिः हां, हो रही हैं। यह तो आपने एक ही दी, इससे ज्यादा भी खराब हरकतें हो रही हैं। वह तो मुझे भी मालूम है और आपको भी मालूम है।

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

मैं लंच भी डिले कर रही हूं आप लोगों के लिए।

श्री संजय निरुपमः मैडम, मैं यह पूछ रहा हूं कि हमारा विदेश मंत्रालय और हमारी सरकार आखिर कब तक बर्दास्त करती रहेगी?

श्री राधाकिशन मालवीय (मध्य प्रदेश): मैडम, माननीय सदस्य नये है और ये आपके सुझावों को मानेंगे।

उपसभापतिः मानेंगे, जरूर मानेंगे, क्यों नहीं मानेंगे?...(व्यवधान)...प्रधान जी तो पुराने हैं वे तो मानते हैं।

श्री सतीश प्रधानः हम यह देखेंगे कि सदन की गरिमा कैसे बढ़े और हमारी तरफ से सदन की गरिमा को कोई ठेस नहीं पहुंचेगी।

उपसभापतिः बिल्कुल ठीक है। आप भी हमारी बात मानते हैं, वह भी हमारी बात मानेंगे। जल्दी कीजिए I will finish the Special Mentions, then adjourn the House for lunch.

Deaths due to Malaria and Dengue in Haryana

SHRI S.S. SURJEWALA (Haryana): Madam, I would like to draw the attention of this House to a very important issue regarding thousands of deaths on account of dengue, malaria, viral fever and many other varieties of fever which have occurred in the State of Haryana in the last two-three months. Lakhs of people are suffering due to these diseases. Deaths are still being reported due to these diseases. This menace has not stopped. Of course, grave conditions prevailed in the Mewat area of Haryana which is next door to Delhi. This situation has become so grave as there were heavy rains in the months of August and September and a lot of water had stagnated there. The State Government has failed to undertake de-watering operations. Due to this stagnant water, this problem has become very widespread. Madam, in addition to the Mewat area, there are six more districts in the state ot Haryana which have been the worst affected.

The State Government is not extending any medical help and the people are still